अथ छवाँ अध्याय

मन्त्रों से रोगों का इलाज

आधाशीशी का मंत्र

ॐ बन में बसी बानरी उछल पेड़ पर जाय कूद कूद शाखन पर फल खाय। आधा तोड़े फोड़े आधी शीशी जाय।

कागज पर स्याही से हथपाई खींचे और सात आड़ी रेखायें काटती चली जाय। इसी तरह कई बार करे तो आधा शीशी जावे। (साथ-साथ मन्त्र पढ़ता जावे)

दूसरा मन्त्र

ओम् नमो आदेश गुरु की काली चिड़ी चिग २ कर बोली आवा बासे हारे सजी हनुमान हांक मारे आधा शीशी हरे गुरुशक्ति मेरी प्रजा फूरो मंत्र बाबा ईश्वरी।

इस मन्त्र को नौ बार पढ़े और पढ़ कर चाखने से आधाशीशी चली जाती है।

आँख दुखने का मंत्र

ओम् नमो झलमल जहर नली तलाई अस्ताचल पर्वत से आई। जहां जा बैठा हनुमान जाई। फूटे ना पाके करे न पीड़ा, यती हनुमान ठाके पीड़ा।

विधि :—

बरगद के पत्ते से तेरह बार झाड़े और साथ ही साथ मन्त्र पढ़ता जाये।

पीलिया का मंत्र

ओम् नमो बार बैताल असुराल नारसिंहदेव जो स्वादतुखादी सुभाल सुभाल पीलिया की झारे चाटे रहे न पीलिया निशान। जो रह जाये तो हनुमान की आन।

विधि :—

रोगी के माथे पर नारियल का तेल कटोरी में लेकर सात बार चन्दन से मले।

मलते समय ऊपर लिखे इस मंत्र का उच्चारण करें और दिन में दो दफे इसका प्रयोग करें।

कुत्ता काटने का मंत्र

ओम् नमो कामरूदेश कामाक्षी देवी जहां रहे इस्मायल योगी, योगी ने पाली कुत्ती दस काली दस पीली दस लाल दस काबरी। रङ्ग बिरङ्गी दस खड़ी दस माल ठिकावें। रक्षा करे इनका विष हनुमान हरे गुरु गोरखनाथ।

विधि :—

इस मन्त्र को ग्रहण की रीति से १०० दफे जपे। घी

का दीपक जला कर मीठे का भोग लगावे इस प्रकार सिद्ध करे और जिसे कुत्ते ने काटा हो उसके घाव के चारों तरफ गोइठा की राख लेकर २७ बार मन्त्र पढ़कर लगा दें तो दो ही दिन में ठीक हो जायगा।

बिच्छू के विष उतारने का मंत्र

ओम् नमो सुरहगाय पर जाय हरी दूब खाती फिरे ताल तलैया पानी पिये सुरहगाय ने गोबर किया बिच्छू सात जिसमें उपजे हरा लाल पीले काले उतरे बिच्छू का उतर जा या नहीं गरुड़ उड़कर आया सत्य नाम आदेश गुरु का शब्द फूरो साँचा मंत्र।

इस मन्त्र को १०८ बार दीवाली के दिन जपे और सिद्ध करे और जिसको बिच्छू ने काटा हो, इस मंत्र को पढ़े और उसे पानी पिलावे तो विष उतर जाये।

पहला मन्त्र

ओम् भुं हुँ चं कं नं लं ओ ओं हं हं।

विधि :—

इस मंत्र को पढ़ कर जहाँ बिच्छू काटा हो वहाँ पर मौलश्री को छाल पीस कर लेप करने से सारा विष दूर हो जायगा।

ओम् नमो आदेश गुरु का समुद्र २ है खाई ।

इस मन्त्र को सिद्ध करले फिर जिसे बिच्छू ने काटा हैं उसे इस मन्त्र को पढ़ कर पानी पिलाया जाय तो विष उतर जायेगा ।

प्रेत वशीकरण मंत्र

ओम् स ल सृनोता सोसलबाई काग पढ़न्नाधाई आई ओल ठ: ठ: ।

विधि :—

रविवार के दिन आधी रात को नङ्गा होकर बबूल के पेड़ के नीचे आक की लकड़ी जलावै और मंत्र पढ़े फिर काला तिल और चने की आहुति दे तो प्रेत बातें करे उस समय दृढ़ होकर अपना हाथ काटे और चार बूँद खून धरती पर गिरा देवे तो प्रेत हमेशा वश में रहे।

आयु बढ़ने का मंत्र

ओम् आरी मेडा हार राई में पहरा कारहार पुतली वह स्थी स्थी ।

विधि :—

इस मंत्र को कौए के पंख पर रविवार के दिन पढ़े और सिर पर बाँधे तो आयु बढ़े ।

फोड़ा झारने का मंत्र

ओम् रहती लहलूमीयां आव भूता ग्रहतनो ओं ठः ठः।

विधि :—

शनिवार के दिन रास्ते की धूल से यह मन्त्र पढ़ कर सात बार झाड़े तो फोड़ा में आराम हो।

पानी से दूध होने का मन्त्र

ओम् बिहश्त सादियाम सहाल अह अह रः।

विधि :—

शनिवार के दिन हिंगुआर के बाल ले आवें और मन्त्र पढ़ कर पानी में डालें तो पानी दूध हो जाय।

आँख की फूली कटने का मंत्र

ओम् हजार ज्वाला थः।

विधि :—

इस मन्त्र को शनिवार के दिन पढ़े और छूरी से जमीन पर रेखा खींचें तो आंख की फूली चली जाय।

भूख न लगने का मंत्र

ओम् गुजाह दरवांउन मखसुख मांस रघिलतबी आहूम आहूम।

विधि :—

रविवार के दिन इस मन्त्र को पढ़ कर चर्खी का फल खाले तो कभी भी भूख न लगे।

डबके का मन्त्र

ॐ नमो खांगरी खांगरी कहाँ एक लाख पर्वती पर गया सवा लाख पर्वती पर जाय कर क्या किया घुसेड़ा छूरा घुसेड़कर छूरा क्या किया डबकि का हाथ पैर काट काले कम्बल में लपेट खाया समुद्र में बहाया।

विधि :—

रविवार के दिन आधी रात के समय में छै अंगुल का टुकड़ा एक बाण (तीर) को लेकर रास्ते में खड़ा कर दो तो डबके की बीमारी अच्छी हो जायेगी।

तिजारी ज्वर का मन्त्र

ॐ नमो महाउद्दष्टि योगिनी प्रकोर्णदष्ठाखादती वर्ग वतिनसित भक्षित ओं ठः ठः ठः।

विधि :—

इस मन्त्र को गूलर के पत्ते पर पढ़े और इसे बायें भुजा पर बांधे तो तिजारी ज्वर चला जाय।

चौथिया निवारण मन्त्र

ॐ ऐं ओं महमह द्रव्य ओं ऐं बहनओं ह्रीं ।

विधि :—

रविवार को किसी भी नदी में खड़े होकर इस मंत्र को १०५ दफें जपे तो चौथिया दूर हो जाय ।

बर्राने का मन्त्र

ओ कं कं कं कं कं ठं ठः ।

शनिवार मंगलवार को नीलकंठ के पंख पर मंत्र पढ़ कर शिखा में बाँध ले तो रात में सोते समय बर्राने लगे ।

प्रेत निवारण का मन्त्र

ॐ नमो आठ खाठ खाट की लाकड़ी मुजवनी का मुवा मुरदा नहीं तो महावीर की आन :—

विधि :—

अमावस के दिन लोबान छालछबीली चमेली के फूल लौंग असगंध कपूर आदि लेकर श्मशान में जाय तो मशान उठे और आवाज निकले ।

गर्भ धारण मंत्र

ॐ हीउल जालल्य ठ ठ ओं हीं ।

विधि :—

ऋतु काल में स्त्री और पुरुष शेर की खाल पर दोनों ही बैठे और पुरुष स्त्री के कान में इस मन्त्र को १०३ दफे कहे तो स्त्री को गर्भ रहे ।

गर्भ रक्षा मंत्र

ॐ रुद्रा मींद्रव ही हा हा हा ओं ही ।

विधि :—

शनिवार की रात को गुग्गुल की धूप दे और गर्भवती स्त्री के पास २११ दफा जपे तो उस स्त्रीं को किसी प्रकार का कष्ट नहीं हो सकता और गर्भरक्षा हो ।

शिशु रोदन मंत्र

ओम् नमो दहवायरफे रस्ट ही ।

विधि :—

स्नान करे और किसी भी पवित्र स्थान पर बैठ कर आठ कोरी सींक से मन्त्र पढ़ते हुये झाड़े तो रोता हुआ बालक चुप हो जाय ।

टोना का मंत्र

ओम् बज्र प्रहार कपाट कलक अलक पल लंका का फलक पलांग वती की वाचा ।

विधि :—

इस मन्त्र को २३ दफे पढ़ कर चमेली के फूल से पानी नारसिंह के ऊपर फेंके तो नारसिंह बँध जायगा

नेत्र बाधा निवारण मंत्र

ओम् अगली गगाली अताक पताल मर्द गर्द अदार कार फट फट उत्कट हूँ ठः ।

विधि :—

शनिवार के दिन नीम के पत्तों को लेकर उसी से झाड़ दे और २४ दफे इस मन्त्र को जपे तो आँख की बाधा दूर हो ।

कर्ण बाधा निवारण मंत्र

ऊंकननप सार धांवर धां २ प्रवेश कर डार डार झार झार मार मार पात हुँकार शब्द साँचा ।

विधि :—

साँप की बाँबी रज से २३ दफे इस मन्त्र को पढ़े और झार कर मिट्टी कान से लगावे तो सब प्रकार का रोग दूर हो जावे ।

कण्ठ कष्ट मंत्र

ओम् नमो नरसिंहाय आदेश गुरु का घाई कराई का करता चलतां वज्रबेदन भेदत ओं उ: उ: ।

विधि :—

उत्तर दिशा में बैठे तथा कुएँ पर की घास को लेकर मन्त्र पढ़कर रोगी को देने से कंठ बाधा दूर हो ।

मस्तक पीड़ा का मन्त्र

सहस्त्र घर वाले एसरबाय चले आगे तो पीछे मन्त्र सांचा फूरो बाच ।

इस मन्त्र को मंगलवार के दिन पढ़े और उसे सिद्ध कर ले अगर किसी के सर में दर्द हो तो इस मन्त्र को पढ़कर फूँक मारे तो सिर का दर्द आराम हो जाता है ।

नकसीर निवारण मन्त्र

ओम् लारती मारती दसो दिशा धवला पर्वत खंड खंड करवा मन्त्र सांचा फूरो बाच ।

विधि —

इस मन्त्र को पढ़े और पानी में फूक मारता जाय फिर उस पानी को नाक से सुरक ले तो नकसीर बन्द हो ।

ज्वर निवारण मन्त्र

ओम् भैरव भूतनाथे विकराल काये अग्नि वर्ष धाये सर्व ज्वर बन्द बन्द मोचय त्रयम्बके ती हुँ ।

विधि :—

इस मन्त्र को गुलाब के हरे पत्ते पर पढ़ कर दाहिने हाथ में बाँधे तो ज्वर चला जाय ।

बवासीर का मंत्र

ओम् छई छलक आई आहुम आहुम कं कां कीं हूँ ।

विधि :—

शनिवार और सोमवार के दिन इस मन्त्र से पानी फूँक कर आबदस्त ले तो बवासीर चला जाय ।

विदेशी को घर बुलाने का मंत्र

ओम् ग्वला ग्लीं ग्लुं ओं श्रीं ह्रां ह्रः ।

विधि :—

काले मृग की छाल पर पीपल के नीचे बैठ रुद्रवन्ती और श्रीफल की खीर मनाकर मन्त्र पढ़कर आहुती दे तो विदेश गया हुआ आदमी फौरन घर आ जाये ।

सुई निकालने का मन्त्र

ओम् नमो चढ़कर चुना लोहार सारे गढ़े लोहार लोहे का तोड़ तोड़ के किया पानी लोहा जार भस्म कर हानी राम वीर तो जाया माटी लक्षमन वीर मुद घाव पाव फूटे वीरडा करे तो राम चन्द्रही रक्षा करे। शब्द सांचां पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो बाच।

विधि—

जहाँ सुई गड़ी हो वहाँ पर हाथ फेरे और भभूत की चुटकी भर कर मन्त्र पढ़ता जाय तो सुई अपने आप वहाँ से निकल जायगी।

नजर झाड़ने का मम्त्र

ओम् नमो सत्यनाम आदेश गुरु को ठाम नगर जहां बोले छल से अमृतवानी पर पीर न जानी जहां से आई कौन जाति तेरी कहाँ की टेरे की अबताई। कहाँ धाम किसकी बेटी क्या है नाम अब वास करले तेरी माया कहाँ से उड़ी कहां जाय मेरी बातें सुन चित्त लाय जैंसी हो सुनाऊँ, जाय। तेलिन तमोलिन चमारिन खतरानी मेहतरानी कुम्हारिन कायथिन राजा की रानी जाको दो

सवाही के सिर पड़े पार नजर से रक्षा करे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फूरो मन्त्र ईश्वरोबाच।

विधि :—

सुबह के समय बालक को सिर से पैर तक झाड़ दे और साथ-साथ मन्त्र पढ़ता जाय।

पशु रोग नाशक मन्त्र

ओम् नमो बेली देहली बाँधी दहलाय राम सारी खाट की पशु नीको हो जाय।

विधि :—

चारों तरफ की चार खाँटगो खिड़कीं में खड़े होकर पढ़े तो रोग आपसे आप भाग जाये और पशु भी ठीक हो जाय।

पशुओं के कीड़े झारने का मन्त्र

ओम् नमो कीड़ारे कुंडु कुंड़ालो लाल पूंछ तेरा मुँह काला। हैं तोहिं पूझा कहखे आका तूने सब मास खाया। अब तू जाय भस्म हो जाय। गुरू गोरखनाथ करे सहाय।

यह मन्त्र पढ़ते हुए आम की डाली से सात बार झाड़े तो सब कीड़े मर जायें।

दाढ़ दर्द का मन्त्र

ओम् नमो कामरू देस कामनी देवी जहाँ बसे इस्माइल योगी। इस्माल योगी ने पाली गाय, नित उठ वन में चरने जाय, चरे सूखे घास खाय जिसने गोबर किया जा में उपजा मुताला पूंछ पुछाला धड़ है पीला मुँह काला दाँत गले मसूड़ा पीड़ा करे तो गुरु गोरख नाथ की दुहाई।

विधि—

इस मन्त्र को लोहे की पिरेग पर पढ़े और उसे काठ में ठोंक दे तो मसूड़े की पीड़ा दूर हो जाय।

दाढ़ के कीड़े झारने का मन्त्र

सकोरा सामे में सीसे में लींची में पानी में कीड़ा कीड़ा करे पीड़ा हरे। शब्द साँचा में पिंड काँचा फूरो मंत्र इश्वरो बाचा।

इस मन्त्र को लोहे के कीले पर पढ़कर तथा दाढ़ के कीले को कुँआ में डाले तो सब कीड़े मर जाँय।

॥ इति छठाँ अध्याय सम्पूर्णम् ॥

—:०:—